सितम्बर-दिसम्बर, 2023

बातूनी

अंक-132

सितम्बर-दिसम्बर, 2023

बातूनी

अंक-132

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- भलाई 4
- पेड़, पेड़ 5
- किसान और उसकी पत्नी 6
- भारत देश 7
- तितली रानी, तितली 8
- भूखा शेर 9
- जादुई जग 10
- मेरे पापा, हमारी स्कूल 11
- सर्दी, गर्मी 12
- मूली रानी, क्रिसमस 13
- मोहन और मोर 14
- चिड़िया आई, चिड़िया 15
- टमाटर 16
- हाथी, पतंग 17
- पेन, सेब 18
- मेरा बस्ता, मेरी यादें 19
- दयालू शेर 20
- स्वच्छ पर्यावरण–स्वस्थ सब 21
- गाँव में लड़ाई 22
- माँ–बेटियां 23
- अपना चित्र–अपनी बात 24
- ऐसा हो शिक्षक हमारा 25
- हमारे आस–पास की घटनाएं 26
- हमारे आस–पास की घटनाएं 27

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
रेखा जैन
मधु

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

मुख्य आवरण : सानिया, समूह–महक
पिछला आवरण चित्र : फोटो कॉलाज
बॉर्डर बनाया : फजीन, समूह–महक

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

कैसे हैं आप सब ? मौसम बदल रहा है। सर्दी शुरू हो गई है। इसलिए बच्चो अपना ध्यान रखना है, जैसे गर्म कपड़े पहन कर रहना। खाने में ठंडी चीजों से परहेज करना। बाजरे की रोटी, मक्के की रोटी, हलवा, तिल के लड्डू मजे से खाना।

इस बार मुझे आपके द्वारा भेजी गई कहानियां, कविताएं और खूब सारे चित्र मिले। सभी रचनाओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी प्यारी बातूनी इन सबको एक साथ लेकर आ रही है, जिससे इन रचनाओं को आप सब भी पढ़कर मजे ले सको।

मुझे आप–अपनी रचनाएं इसी तरह भेजते रहना।

इसी आशा के साथ।

आपकी प्यारी बातूनी।

भलाई

एक गांव में मुरलीलाल नाम का एक अच्छा आदमी रहता था। वह सबकी मदद करता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और दो जवान बेटियां थी। उसे बेटियों की शादी की चिन्ता रहती थी। क्योंकि उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपनी बेटियों की शादी धूमधाम से कर सके। वह हमेशा यही सोचता रहता था कि लड़कियों की शादी कैसे करूंगा। एक दिन वह साईकिल से शहर जा रहा था। रास्ते में उसे एक जगह भीड़ दिखाई दी। उसने साईकिल को रोका और देखा कि किसी का एक्सीडेन्ट हो गया था। एक व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गया है। लेकिन सब उसे देख रहे थे। किसी ने भी उसके घर सूचना करने या हॉस्पिटल पहुंचाने का प्रयास नहीं किया। बस खड़े–खड़े देख रहे थे। मुरलीलाल ने तुरन्त एक रिक्शा रुकवाया और उसे हॉस्पिटल पहुंचाया। इलाज शुरू करवाकर उसके घर सूचना दी। थोड़ी देर बाद उसके घर वाले आ गये। जैसे ही घरवालों ने उसकी हालत देखी तो घबरा गये। डॉक्टर ने कहा, "घबरायें नहीं, अब इनकी हालत ठीक है।" घर वाले डॉक्टर को धन्यवाद देने लगे। डॉक्टर ने कहा, कि "धन्यवाद मुझे नहीं उनको दो, जिन्होंने समय रहते इनको हॉस्पिटल पहुंचाया और ईलाज शुरू हो पाया। यदि थोड़ी देर और कर देते तो शायद हम इनको नहीं बचा पाते।" उसके घर वालों ने मुरलीलाल को ढूंढा और धन्यवाद दिया। बातचीत के बाद मुरलीलाल को जो बेटियों की शादी की चिन्ता थी, उसके लिए भी उन्होंने कह दिया कि आप बिना किसी चिन्ता के बेटियों की शादी के लिए अच्छा घर व वर ढूंढ़ कर शादी कर दो। जितना खर्चा होगा वो सब हम दे देंगे। उन्होंने कहा, "आप परिवार सहित ही मेरे घर आकर रहो, वहीं पर आपको व आपकी पत्नी को काम भी दे देंगे।" यह सुनकर मुरलीलाल की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने घर आकर पूरी बात अपने परिवार को बताई। वे यह सब सुनकर बहुत खुश हो गये।

— अनुष्का, समूह–महक

पेड़

पेड़ हूँ, मैं पेड़ हूँ।
ऑक्सीजन मैं देता हूँ।
फल सब्जियां और दवाई भी मुझसे मिलती है।
हवा छाया भी देता हूँ। हर घर में मैं होता हूँ।
बिना उगाए उग जाता हूँ।
वह होता है, नीम का पेड़,
पेड़ हूँ, मैं पेड़ हूँ।

– सोफिया ,समूह–खुशबू

पेड़

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
हरा भरा जीवन बनाओ।
छाया यह हमको देते हैं,
फल ये हमको देते हैं।
बाढ़ से हमको बचाते हैं,
प्रदूषण दूर हटाते हैं।
हम सब ने ये ठाना है,
मिलकर पेड़ लगाने हैं।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,
हरा भरा जीवन बनाओ।
सर्दी–गर्मी रहते हैं,
नहीं कभी कुछ कहते हैं।
आओ मिलकर पेड़ लगाये,
देश हमारा स्वच्छ बनाये।

– निशा, प्रीति, समूह–महक

किसान और उसकी पत्नी

एक गांव में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। दोनों बहुत मेहनती थे। किसान खेत पर काम करता था और उसकी पत्नी घर के सारे काम संभालती थी। एक दिन किसान अपने खेत में बीज बो रहा था और उसकी पत्नी उसके लिए घर पर खाना बना रही थी। अचानक आसमान में बहुत तेज बादल गरजने लगे और देखते ही देखते बहुत तेज बारिश होने लगी। किसान का सारा बीज पानी के साथ बह गया। यह देखकर किसान बहुत दुखी हुआ। थोड़ी देर में बारिश रुक गई। किसान बहुत उदास मन से अपने घर आया। उसकी पत्नी ने पूछा आप इतने उदास क्यों हो ? किसान ने कहा कि तुमने देखा अभी कितनी तेज बारिश हो रही थी। मैं बीज हो रहा था और हमारा पूरा बीज बारिश के पानी के साथ बह गया। अब हम क्या करेंगे ? किसान की पत्नी ने पति को समझाते हुए कहा आप परेशान मत होइए। अभी आप खाना खा लीजिए। सुबह देखेंगे क्या करना है। किसान ने बड़े दुखी मन से खाना खाया और सो गया। दूसरे दिन सुबह किसान की पत्नी अपने पति के लिए पड़ोस से कुछ बीज उधार मांग कर लाई। दोनों पति–पत्नी अपने खेत पर गए। वहां जाकर उन्होंने खेत में दोबारा से बीज बोए। कुछ दिनों बाद उनके खेत में फसल उग गई। किसान ने फसल को बाजार में बेचकर पैसे कमाए। उस पैसे से अपना घर बनाया। अब वह अपनी पत्नी के साथ उस घर में आराम से रहने लगा।

– साहिबा, समूह–सागर

साहिब ,समूह–सागर

भारत देश

भारत देश हमारा है, प्यारा देश हमारा है।
हमें जान से प्यारा है, हमारा ये देश।
सुख समृद्धि से भरपूर है हमारा देश।
हरा भरा है हमारा ये देश,
हमारी आंखों का तारा है ये देश,
हमें जान से प्यारा है, हमारा ये देश।
भारत देश की मिट्टी, लगती हमको जान से प्यारी,
हरियाली है हमारे देश की सबसे न्यारी।
हमारे भारत की पहचान है तिरंगा,
भारत की आन बान और शान है तिरंगा।
हमें जान से प्यारा है, हमारा ये देश।

– प्रीति वर्मा, समूह महक

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
तितली रानी बड़ी है प्यारी।
तितली रानी, तितली रानी,
तितली रानी, बड़ी सयानी।
आसमान में उड़ती जाती,
सबके मन को भाती है।
सारे फूलों का रस ले जाती,
पंख फैलाए इतराती जाती।
फूल–फूल पर जाती,
रस लेकर शरमा जाती।
तितली रानी बड़ी प्यारी,
तितली रानी बड़ी सयानी।

– फिजा, समूह–खुशबू

तितली

तितली आई, तितली आई।
कितनी प्यारी, तितली आई।
रंग बिरंगी तितली आई।
तितली खेले फूलों से।
रहती दिन भर बागों में।
चाहे जब उड़ जाती हो।
चाहे जब आ जाती हो।
तितली आई, तितली आई।
कितनी प्यारी, तितली आई।

(परी समूह के बच्चों द्वारा मिलकर बनायी गई कविता।)

भूखा शेर

एक जंगल था। उस जंगल में एक शेर रहता था। शेर बहुत बूढ़ा हो चुका था। शेर अब शिकार नहीं कर पाता था। एक दिन शेर बहुत भूखा था। अचानक उसे एक सियार दिखाई दिया। शेर ने सियार का शिकार करने की तरकीब सोची। वह चुपके से एक पेड़ के पीछे छुप गया। जैसे ही सियार पेड़ के पास आया। वह सियार पर टूट पड़ा। लेकिन सियार बच कर भाग गया। शेर गुफा से बाहर निकला। गुफा के बाहर उसे एक मरा हुआ चूहा दिखाई दिया। चूहे को देख कर शेर बहुत खुश हुआ। उसे बड़े चाव से खा लिया। लेकिन शेर का पेट नहीं भरा। शेर भोजन की तलाश मे जंगल मे भटकता रहा। लेकिन वह एक भी जानवर का शिकार नहीं कर पाया। शेर वापस अपनी गुफा में चला गया। उसके बाद वह कभी भी जंगल में नहीं आया। इसके बाद सभी जंगल के जानवर बिना डर के रहने लगे।

– उजाली समूह के बच्चों ने एक–एक वाक्य बोलकर कहानी बनाई।

छोटू समूह–उजाला

जादुई जग

एक गांव था। उस गांव में एक किसान झोपड़ी बनाकर रहता था। एक दिन किसान खेत में काम कर रहा था। तभी उसकी नजर जमीन में एक चमकती हुई चीज पर पड़ी। उसने उसे ध्यान से देखा तो वह एक जग था। उसने सोचा कि यह चमकता हुआ जग यहां कहां से आया ? क्यों न मैं इसे अपने घर ले जाकर पत्नी को दे दूं। शायद इससे वह खुश होगी। वह उस जग को लेकर अपने घर आ गया और अपनी पत्नी को दे दिया। उसकी पत्नी उसे देखकर बहुत खुश हुई और बोली कि तुम यह जग कहां से लेकर आए हो। किसान ने उसे सब कुछ बता दिया। रात को किसान की पत्नी ने आधा जग पानी भरकर रख दिया। जब सुबह उठकर देखा तो वह जग पूरा पानी से भरा हुआ था। तभी उसका पति बोला यह जग जादुई है। यह जग इसी तरह हमारी मदद करता रहेगा। फिर इससे हम गांव वालों की मदद करेंगे। इसके बाद उस जग से जो भी मांगते वह सब देता। इस प्रकार वह किसान गांव वालों की भी खूब मदद करता। अब गांव में किसी प्रकार की परेशानी नहीं रही और पूरा गांव मजे से रहने लगा।

– हिमांशी, जानवी, निखिल, कविता; समूह–उजाला

मेरे पापा

मेरे पापा आयेंगे।
हमको लेकर जायेंगे।
पापा मेला दिखायेंगे।
झूला भी झुलायेंगे।
पानी–पुरी खिलायेंगे।
पानी–पुरी चरपरी।
मीठी वाली खिलायेंगे।
पापा चाऊमीन खिलायेंगे।
चाऊमीन भी चरपरी।
सॉस उसमें डालेंगे।

पापा हमारे अच्छे।
देखो कितने सच्चे।
पापा मेरे आयेंगे।
दुनिया हमें घुमायेंगे।

– अजहर, समूह–सागर

मनीष, समूह–तितली

हमारी स्कूल

हमारी स्कूल सबसे प्यारी,
सारी दुनियां से ये न्यारी।
हम सब इसमें खेल खेलते,
धूम–धड़ाके से नाचते गाते।
कभी बाते करते, कभी किताबें पढ़ते,
हमारी स्कूल में तो नियम हैं न्यारे।
हम चित्र बनाते सबको दिखाते,
अच्छे से उन्हें पिन बोर्ड पर सजाते।
हमारी स्कूल सबसे प्यारी,
सारी दुनियां से वह न्यारी।

स्कूल में हम झूला झूलते,
पढ़ते लिखते खूब खेलते।

– काजल, समूह–खुशबू

दीपिका, समूह–रौशनी

सर्दी

मौसम बदला, आई सर्दी,
श्याम पहने मोटी वर्दी।
ठंडी हवा जब जोर से चलती,
पिंकी इसमें खूब ठिठुरती।
कानों पर मफलर ऊपर कम्बल,
रहना इसमें खूब संभलकर।
वरना हो जायेगी खांसी–जुकाम,
मौसम बदला सर्दी आई।

– श्लोक, समूह–रोशनी

हेमलता, समूह–तितली

गर्मी

दिलकुश, समूह–खुशबू

गर्मी के दिन आते है,
हमको बहुत सताते हैं।
कहां खेलने जाएं हम,
तेज धूप में निकले हम।
खेल का मैदान गरम,
लू को आती नहीं शर्म।
कहीं चैन ना पाए हम,
मन ही मन झुंझलाते हम।
गर्मी के दिन आते हैं,
हमको बहुत सताते हैं।

– हिमानी, समूह गुलाब

मूली रानी

प्रिया, समूह–तितली

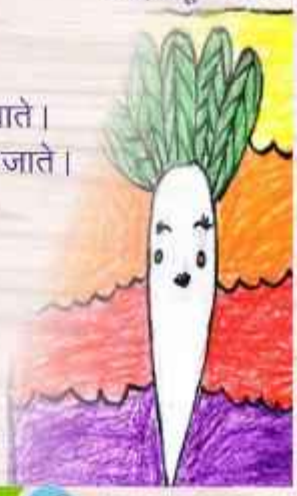

मूली रानी, मूली रानी, लगती हो तुम बड़ी सयानी।
सब तुमको खाते हैं, खाकर बहुत इतराते हैं।
मुंह का स्वाद अच्छा करती, सलाद में सब तुमको खाते।
सब्जी भी फिर तुम्हारी बनाते, पराठे भी बनाकर खा जाते।
अचार भी तुम्हारा बनाते,
बनाकर डिब्बे में भर लेते।
खाने के बाद बहुत पछताते,
बहुत पादते, बहुत सड़ाते।
मूली रानी मूली रानी,
बड़ी सयानी बड़ी सयानी।

– हर्षिता, समूह–तितली

क्रिसमस

दिलकुश, समूह–खुशबू

क्रिसमस आने वाला है।
सांता क्लॉज आने वाला है।
हिरण की सवारी लेकर आने वाला हैं ।
हमारे लिए तोहफा लेकर आने वाला हैं।
कोई कहता है जूते में पर्ची डालो।
तो रात में तोहफा आ जाएगा।
छोटे–छोटे पेड़ को सजा दो,
तोहफा आ जाएगा।
चॉकलेट हम खाएंगे, क्रिसमस हम मानायेंगे।
लाल–लाल कपड़े पहनेंगे।
सब बच्चे मिलकर क्रिसमस मनाएंगे।
बड़े मजे तब आएंगे,
क्रिसमस आने वाला है खुशियां लाने वाला है।

– इशिका, हेमलता, समूह–तितली

मोहन और मोर

एक गांव में मोहन नाम का लड़का रहता था। उसके पास एक मोर था। मोर का नाम चीकू था। वह दोनों एक–दूसरे से बहुत प्यार करते थे। एक दिन मोर घर से गायब हो गया। मोहन परेशान हो गया और उसे ढूंढ़ते–ढूंढ़ते जंगल में पहुंच गया। उसने जंगल में एक मरे हुए मोर को देखकर सोचा कि उसका मोर मर गया और वह जोर–जोर से रोने लगा। वह रोते–रोते घर पहुंचा। उसे रोता देखकर उसकी मम्मी ने पूछा कि बेटा क्या हुआ ? उसने बताया कि मम्मी चीकू मर गया है। उसकी मम्मी ने आश्चर्य से फिर से सवाल किया कि वह कैसे मर गया ? सुबह तो मैंने उसे देखा था फिर वह कैसे मर गया ? उसकी मम्मी ने बोला बेटा तुमने कहाँ देखा था ? उसने बोला कि मैंने उसे जंगल में मरे हुए देखा था। उसकी मम्मी ने बोला तुमने किसी और को देखा होगा, क्योंकि चीकू तो सुबह मेरे साथ तेरी मौसी के घर गया था। अभी तुम्हारी मौसी के घर पर ही है, तो वह दौड़ते–दौड़ते अपनी मौसी के घर गया। उसने देखा कि उसका चीकू वहां खेल रहा था तो उसने उसे देखते ही गले से लगा लिया और वह बहुत खुश हो गया।

– सोनाक्षी,समूह–रोशनी

चिड़िया आई

चिड़िया आई, चिड़िया आई।
फर्र–फर्र करती चिड़िया आई।
आसमान से चिड़िया आई।
उड़ती–उड़ती चिड़िया आई।
चीं–चीं करती चिड़िया आई।
बच्चो देखो चिड़िया आई।
चिड़िया दाना खाने आई।
बागों से वो उड़ती आई।
घोंसला पेड़ों पर बनाई।
चिड़िया आई, चिड़िया आई।
आसमान से चिड़िया आई।

सुहाना, समरीन, समूह–सागर

सुहाना, समरीन, समूह–सागर

चिड़िया

सोफिया, समूह–खुशबू

चिड़िया आई, चिड़िया आई
चीं–चीं करती चिड़िया आई।
आसमान से उड़ती आई,
साथ में अपने बच्चे लाई।
सारे जग में घूमती आई,
बच्चों का मन बहलाते आई।
चुन–चुन करती चिड़िया आई,
चिड़िया आई चिड़िया आई।

– सादिया, समूह–खुशबू

टमाटर

एक मरियम नाम की बूढ़ी औरत थी। उसने अपने खेत में बहुत सारी फसलों के साथ टमाटर भी उगा रखे थे। एक दिन वह टमाटर तोड़कर एक टोकरी में रख रही थी। एक चालाक टमाटर वहां से भाग गया। मरियम उसके पीछे भागी, पर टमाटर हाथ में नहीं आया। टमाटर को एक गाय ने देखा और सोचा कि क्या लाल–लाल टमाटर है ? इसे खाना चाहिए। वह टमाटर को रोकने लगी, पर टमाटर गाय की टांगों के बीच में से भाग कर पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसे एक बकरी ने देखा और सोचा वाह क्या लाल टमाटर है ? इसे खाना चाहिए। बकरी ने उसे खाना चाहा, लेकिन टमाटर पहाड़ से गुड़कता हुआ जमीन पर आ गया। वहीं एक पेड़ पर बैठा बंदर यह सब देख रहा था। बंदर भी टमाटर को खाने के लिए उसके पीछे भागा। लेकिन जान बचाकर एक झाड़ी में छुप गया। वहां बैठे–बैठे टमाटर ने सोचा कि मुझे हर कोई खाना ही चाहता है, तो अच्छा होगा कि मैं वापस बुढ़िया के पास ही चला जाऊं। क्योंकि उसने मुझे इतनी मेहनत से उगाया और बड़ा किया है। अन्त में टमाटर वापस बुढ़िया के खेत में चला गया और जब बुढिया अगले दिन खेत में आयी तो उसे वह लाल टमाटर दिखा। वह उसे उठाकर अपने घर ले गई और सलाद बनाकर खाया।

– उवेश, समूह–तितली

प्रिया, समूह–तितली

हाथी

मोटे–मोटे पैरों वाला,
चौड़े–चौड़े कानों वाला।
लंबी–लंबी सूंड वाला,
छोटी–छोटी पूंछ वाला,
यह तो मेरा साथी है,
इसका नाम हाथी है।
सूंड में भरकर ठंडा पानी,
मुझको यह नहलाता है।
अपनी ऊंची पीठ पर बिठाकर,
लंबी सैर कराता है।
अजब अनोखा साथी है,
यह तो मेरा हाथी है।

– दिलकुश, समूह–खुशबू

भावना, समूह–रोशनी

पतंग

उड़ी उड़ी उड़ चली पतंग,
कागज की मनचली पतंग।
शर्माती–इठलाती है,
पल–पल में बल खाती है।
कितने रूप हैं, कितने रंग,
नाच रही नकचढ़ी पतंग।
उड़ी–उड़ी उड़ चली पतंग,
कागज की मनचली पतंग।

– अलवीरा समूह–गुलाब

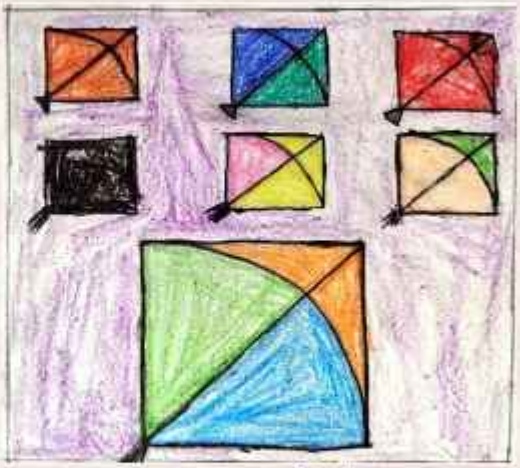

वरूण, समूह–तितली

पेन

पेन–पेन मेरा पेन।
लाल हरा काला पेन।
बॉल पेन, जेल पेन, फाउंटेन पेन।
देखो कितने सारे पेन।
पढ़ने के काम आते हैं,
लिखने के काम आते हैं।
पेन–पेन मेरा पेन,
शिक्षक काम में लेते लाल,
बच्चे काम में लेते नीला।
पेन–पेन मेरा पेन।

– फैज़ मोहम्मद, समूह–गुलाब

मिताली, समूह–गुलाब

सेब

सभी फलों में सेब है प्यारा।
लाल–लाल है, गोल–गोल है,
प्यारा–प्यारा सेब है प्यारा।
एक सेब जो रोज है खाता,
डॉक्टर को वह दूर भगाता।
पापा मुझको सेब दिला दो,
वरना एप्पल जूस पिला दो।

– मिताली, समूह–गुलाब

प्रिया, समूह–तितली

मेरा बस्ता

जब मैं छोटी थी। तब मैंने एक स्कूल में जाना शुरू किया था। उस स्कूल में जाती तो मैं बहुत रोती थी। मुझे मेरी शिक्षिका एक चॉकलेट देती थी। मेरी शिक्षिका का नाम काजल था। मुझे उनकी बहुत याद आती है। उनसे मिलने का मन भी करता है। वहां के दोस्तों की भी याद आती है। यह सब यादें मैं अपने पुराने बस्ते में छुपा कर रखती हूं। क्योंकि उस बस्ते को देखकर ही मुझे यह बातें याद आती हैं। जब मैं छोटी थी तो मेरे पास ताजमहल का एक खिलौना था। मुझे वह मेरे दोस्तों ने बड़े प्यार से दिया था। उसे मैं अपने पुराने बस्ते में छुपा कर रखती हूं और भी ऐसी कई चीजें हैं, जिनको मुझे अपने भाई–बहिनों से छुपाना होता है, तो एक यही जगह होती है जहाँ मैं अपनी चीजें, यादें संजोकर रख पाती हूँ।

– इशिका, समूह–तितली

मेरी यादें

मेरे पास जो भी पुरानी चीज होती है। मैं उनको संभाल कर रखने के लिए अपने स्कूल के पुराने बैग को इस्तेमाल करती हूं। वही मेरे घर में एक जगह है, जहां मैं अपनी चीजों को संभाल कर रख पाती हूं। सबसे छुपा कर रख पाती हूं। एक दिन मम्मी मेरे लिए कुछ खिलौने लेकर आयी तो मैंने उसमें छुपा कर रख दिये। ताकि मेरी बहिन उनको ना ले सके। एक दिन में जीमने गई थी तो मुझे वहां पर पेंसिल, रबर, ड्राइंग बॉक्स मिले थे। मैंने अपने बस्ते में संभाल कर उन चीजो को रखा हैं। इस तरह से मेरा पुराना बस्ता मेरी यादें सम्भालता है।

– हर्षिता, समूह–तितली

दयालु शेर

एक बहुत बड़ा जंगल था। जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल के बीचो–बीच एक बहुत बड़ा तालाब था। सारे जानवर इस तालाब में से पानी पीते थे और हमेशा आपस में मिलजुल कर रहते थे। कोई किसी को तंग नहीं करता था, ना ही किसी को मारता था। एक दिन जंगल में एक शिकारी आया। जंगल में इतने सारे जानवरों को देखकर वह बहुत खुश हुआ। उस शिकारी ने तालाब के किनारे एक बहुत बड़ा जाल बिछा दिया। जब जंगल के छोटे जानवर पानी पीने आए तो शिकारी के जाल में फंस गए। वह सभी जोर–जोर से चिल्लाने लगे। जानवरों के चिल्लाने की आवाज शेर ने सुनी। वह दौड़ता हुआ तालाब के पास पहुंचा। जानवरों को मुसीबत में देखकर उसने जल्दी से जाल को अपने पंजों से फाड़ दिया। सारे जानवर आजाद हो गए। लेकिन तभी बकरी बेहोश हो गई। शेर ने डॉक्टर भालू को बुलाकर बकरी का इलाज करवाया। तभी वहां वह शिकारी आ गया। शेर को देखकर शिकारी डर गया और वहां से भाग गया। सारे जानवर बहुत खुश हुए और शेर को धन्यवाद दिया।

हर्षिता, समूह–तितली

समरिना, समूह–सागर

स्वच्छ पर्यावरण–स्वस्थ हम

एक शहर में भवन नाम की सोसायटी थी। उस सोसायटी के लोग अपने–अपने घरों की सफाई करके कूड़े–कचरे को सोसायटी के बहार ही खुले में डाल देते थे। धीरे–धीरे कचरा बहुत अधिक एकत्रित हो गया और उसमें बदबू आने लगी। सोसायटी भी ख़राब दिखने लगी। चारों तरफ कचरा फैलने लगा और उसमें कीड़े, मकोड़े, मक्खी–मच्छर उत्पन्न होने लगे। सोसायटी में रहने वालों का ध्यान अभी तक इस पर नहीं गया। लेकिन धीरे–धीर सोसायटी में रहने वाले लोगों व उनके बच्चों की तबियत खराब रहने लगी। इससे लोग परेशान होने लगे और सोचने लगे कि सारी बीमारियाँ हमारी ही सोसायटी में आ गई क्या ? एक दिन सोसायटी में स्वास्थ्य कैंप लगवाया गया, जिससे सोसायटी में रहने वाले सभी लोगों का चेकअप हो सके। डॉक्टर ने लोगों का चेकअप किया और उनकी बातें सुनी। डॉक्टर ने सभी लोगों को बताया कि आपके यहाँ जो बीमारियाँ हो रही है, उसका कारण सोसायटी के बाहर पड़ा कचरा है। इसी के कारण आस–पास का वातावरण खराब हो रहा है। हवा के साथ इसमें उत्पन्न कीड़े, मकोड़े, मक्खी–मच्छर सोसायटी के घरों में आकर आपको बीमार कर रहे हैं। डॉक्टर की बातें सुनकर सबको अपनी गलती का अहसास हुआ। सबने मिलकर सोसायटी के बाहर के कचरे को हटवाया और सफाई करवाई। अब सब कचरे को कचरा पात्र में डालने लगे। सभी लोगों को समझ में आ गई कि अगर हमारा पर्यावरण साफ़ रहेगा तो हम भी स्वस्थ रहेंगे।

– फजीन, समूह–महक

सना, फजीन, समूह–महक

गाँव में लड़ाई

एक बहुत बड़ा गाँव था। वहां पर लोग आपस में छोटी–छोटी बातों पर लड़ते रहते थे। एक दिन छोटी–सी नोंक–झोंक के कारण गाँव वालों की आपस में बहुत बड़ी लड़ाई हो गई। उस लड़ाई में कई लोग मर गए और कुछ लोग घायल हो गये। इस घटना के बाद लड़ाई करने वाले लोगों को पुलिस पकड़ कर ले गई। उन्हें सजा हो गई। इस घटना के बाद जब गाँव वालों ने इस लड़ाई के बारे में सोचा तो उन्हें बहुत दुःख और पछतावा हुआ। उन्होंने निश्चय किया कि अब वह कभी भी आपस में नहीं लड़ेंगे। गाँव में आपस में मिलजुल कर रहेंगे और समझदारी से काम लेंगे।

– प्रीति, समूह–महक

प्रीति, समूह–महक

माँ–बेटियां

एक गांव में दो लड़कियां रहती थी। एक का नाम रेखा था, तो दूसरी का नाम हेमलता था। वह बहुत गरीब थीं। उनकी माँ काम करने जाती थी। रेखा व हेमलता स्कूल जाती थी। एक दिन उनकी माँ बीमार हो गई। उन दोनों के पास दवाई लाने के पैसे नहीं थे। वे दोनों सोचने लगी कि ऐसा क्या करें कि हमारी पढ़ाई भी हो जाए और माँ के लिए दवाई भी ले आयें। हेमलता के मन में एक बात आयी। हेमलता ने कहा कि रेखा दीदी मैं एक दिन काम पर माँ की जगह चली जाऊंगी और एक दिन आप चली जाना। जिससे हमारे पास पैसे भी आ जाएंगे। हम अपनी माँ का इलाज भी करा पाएंगे और हमारी पढ़ाई भी नहीं रुकेगी। इस तरीके से दोनों बहनों ने काम किया और अपनी पढ़ाई भी की। जो पैसे उनको मिले उससे माँ के लिए दवाईयां खरीदी और खाने–पीने का सामान भी खरीदा। धीरे–धीरे उनकी माँ ठीक हो गई। उनकी माँ बहुत खुश हुई कि उनकी बेटियों ने उनकी बहुत सेवा की। वे अपनी बेटियों की पढ़ाई नहीं रोकना चाहती थी। इसलिए आगे से उन्होंने दोनों बेटियों को स्कूल भेजा। घर के सारे काम व कमाने का काम वह स्वयं करने लगी ।

– मुस्कान, हेमलता, समूह–तितली

मुस्कान, हेमलता, समूह–तितली

अपना चित्र, अपनी बात

एक बालिका कागज पर अपने मन–मष्तिक में आये विचारों को चित्र के माध्यम से इस प्रकार उकेर रही थी, जैसे उसे पूरी घटना कहीं देखा हो। वह शान्त और गम्भीर मुद्रा में चित्र बना रही थी। शिक्षक ने समझने के लिए बालिका से संवाद करते हुए चित्र के बारे में पूछा, तो बालिका ने चित्र की ओर अंगूली से इंशारा करते हुई बताया कि यह एक छोटी–सी लड़की है, जिसने एक बतख पाल रखी है। यह बतख का घर है। इसमें बतख अपने बच्चे के साथ रहती है। यह लड़की बतख के साथ रोज पेड़ के नीचे खेलती है।

– तमन्ना, समूह–बादल

यह एक घर है, इसमें यह औरत रहती है। यह इसका छोटा बाबू है। दूसरे चित्र की आकृति की ओर इशारा करते हुए बताया कि यह गाय है, जो घास खा रही है। एक लाइन को छूकर बताया कि यह सड़क है। दो–तीन कीम–कांटे जैसी आकृतियों के बारे में बताया कि ये पेड़ हैं। इस तरह तृप्ती ने अपने द्वारा बनाये गये चित्र आकृति के बारे में बताया।

– तृप्ती, समूह–बादल

ऐसा हो शिक्षक हमारा

ऐसा हो शिक्षक हमारा, जो बनाये हमें इंसान,
जो लाये जीवन में सवेरा, ऐसा हो शिक्षक हमारा।
दे हमें ज्ञान का भंडार, करें हमें तैयार भविष्य के लिए,
सही गलत का पाठ पढ़ायें, ऐसा हो शिक्षक हमारा।
गुरु शिष्य का हो नाता ऐसा, आपस में सब बातें साझा हो जाए,
तरह–तरह की शिक्षा देकर काबिल हमें बनाए, ऐसा हो शिक्षक हमारा।
जीवन के हर पथ पर मार्गदर्शक बने हमारा,
मुश्किल में भी काम आये, ऐसा हो शिक्षक हमारा।

– सादेका, फजीन, सना, समूह–महक

हमारे आस–पास घटित घटनाएं

हमारे घर के पास एक धोबी की दुकान थी। वह लोगों के कपड़े प्रेस करता था और उनसे पैसे लेकर अपना गुजारा चलाता था। एक दिन एक अंकल गाड़ी लेकर आये। उन्होंने धोबी अंकल से प्रेस करे हुए कपड़े लेकर अपनी गाड़ी में रख दिये। जब धोबी अंकल ने उनसे पैसे मांगे तो वे उनसे झगड़ा करने लगे। अपने पैसे का रोब दिखाकर वे उनसे झगड़ा कर रहे थे। इसके बाद झगड़ा बढ़ गया तो उन्होने धोबी अंकल को बहुत मारा। उनका एक कुत्ता भी था, उसको भी मार दिया। धोबी अंकल की दुकान उस दिन से ही बंद हो गई। कुछ लोग ऐसे ही होते हैं जो गरीब लोगों से काम करवा लेते हैं और उनको उनकी मजदूरी का पैसा भी नहीं देते हैं। वह अंकल बहुत मेहनत करके अपने परिवार पाल रहे थे, उनकी दुकान बंद करवाकर पैसे वाले अंकल को क्या मिला ?

– इशिका,समूह–तितली

(चित्र : हेमलता, समूह–तितली)

हमारे आस–पास घटित घटनाएं

एक दिन की बात है। मैं हमारे घर के पास खड़ा था। एक पतंग कट कर आ रही थी। मैं उसे लूटने के लिए भागा। लेकिन पतंग पेड़ पर टक गई। मैं उसे उतारने के लिए पेड़ पर चढ़ गया। इतनी देर में जिसकी पतंग कटी थी वह लड़का भी वहाँ आ गया। वह पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। जैसे ही पतंग पेड़ से नीचे आयी वह लड़का उस पतंग को उठाया और वहां से भाग गया। मैं इतनी मेहनत करके भी देखता ही रह गया।

– मोहम्मद समीर, समूह–तितली

हमारे आस–पास घटित घटनाएं

एक बार हम सो रहे थे। उस रात को मेरे दादाजी 30 हजार रुपये लेकर आए थे। हमारे घर में बहुत सारे चूहे थे। रात को चूहों ने उन नोटों को काट दिया। सुबह जब हम सब उठे तब दादाजी ने दादी को बुलाया और यह बात बताई तो वह बहुत तेज–तेज रोने लगी। मेरे दादा भी बहुत रो रहे थे। उन्होंने बहुत मेहनत की थी, उन पैसों को एक–एक करके बचाया था और सारे चूहे खराब कर दिए थे। मेरे दादाजी ने यह बात मेरे पापा को फोन पर बताया। मेरे पापा दूसरे दिन जयपुर से गांव गए। पापा ने दादा–दादी से कहा आप परेशान मत होइए, मैं कुछ करता हूँ। मेरे मामा ने कहा कि हम इनका विडियो बना कर बैंक में चलते हैं शायद बदल जाए। वो उन्हें लेकर बैंक में गए, बैंक वालों ने सारे रुपए बदलने के लिए कह दिया। पापा और मामा उनको लेकर बैंक में गये। बैंक वालों ने नोट बदल दिए। उन्होंने यह बात दादाजी को बताई तो बहुत खुश हो गये। पापा जब नोट लेकर गांव आए तो काजू कतली से एक डिब्बा भी साथ में लेकर आए।

– आर्यन, समूह–तितली

मतदान
पेटी